प्रातःक्लास 4/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है ?

ओमशान्ति। मीठे–2 बच्चों को यह तो निश्चय ज़रूर है कि हमारा बेहद का बाप है। उनको कोई बाप नहीं है। दुनिय(ाँ) में ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसको बाप न हो। एक–2 बात बड़ी अच्छी समझने की है। और फिर नॉलेज भी वह सुनाते हैं जो कब पढ़ते नहीं हैं। नहीं तो मनुष्य मात्र सभी कुछ न कुछ पढ़ते ज़रूर हैं। कृष्ण भी पढ़ा है। बाप कहते हैं मैं क्या पढ़ा हूँ। मैं तो पढ़ाने आया हूँ। मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। मेंने कोई से शिक्षा नहीं ली है। कोई गुरु नहीं किया है। ड्रामा अनुसार बाप की ज़रूर ऊँच ते ऊँच महिमा होगी। गाया भी जाता है ऊँच ते ऊँच भगवान। उनसे ऊँचा फिर क्या होगा। न बाप, न टीचर, न गुरु। यह स्वयं ही बाप, टीचर, गुरु है। यह तो अच्छी रीत समझ सकते हो ऐसा कोई भी व्यक्ति हो नहीं सकता। यही वण्डर खाकर ऐसे वण्डरफुल बाप और टीचर, सद्गुरु को याद करना चाहिए। मनुष्य कहते भी हैं, ओ! गॉड फादर। वह नॉलेजफुल टीचर भी है। सुप्रीम गुरु भी है। एक ही है। ऐसा दूसरा कोई मनुष्य मात्र नहीं होगा। उनका पढ़ाना भी मनुष्य तन में है। वाचा तो ज़रूर चाहिए। यह भी बच्चों को घड़ी–2 स्मृति में रहे, तो भी बेड़ा पार हो जाए। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। सुप्रीम टीचर समझने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जावेगा। वह सदगुरु भी है। हमको योग सिखला रहे हैं। एक के साथ ही योग लगाना है। सभी आत्माओं का एक ही फादर है। सभी आत्माओं को कहते हैं, मामेकं याद करो। आत्मा ही सभी कुछ करती है। इस शरीर रूपी मोटर को चलाने वाली आत्मा है। इनको रथ कहो वा कुछ भी कहो, मुख्य चलाने वाली आत्मा है। आत्मा का बाप एक ही है। मुख से कहते भी हो हम भाई–2 हैं। एक बाप के बच्चे हम आत्माएँ भाई–2 हैं। फिर जब बाप आते हैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में तो भाई–बहन होना पड़ता है। प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली तो भाई–बहन होंगे ना और फिर यह है एडॉप्टशन, भाई–बहन। भाई से बहन की कब शादी नहीं होती। निषेध है। तो यह सभी प्रजापिता ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ हो गई(ए)। तो भाई–बहन समझने से जैसे कि बाप की लवली चिल्ड्रेन्स ईश्वरीय (सम्प्र)दाय हो गए। तुम कहेंगे हम सभी ईश्वरीय सम्प्रदाय। डायरैक्ट ईश्वर बाबा सभी कुछ हमको सिखला रहे हैं। वह कोई से सीखा हुआ नहीं है। वह तो है ही सदैव सम्पूर्ण। उनकी कलाएँ कम वा जास्ती नही होती और सभी की कलाएँ कम और जास्ती होती हैं। ब्रह्मा की, विष्णु की भी होती हैं। बाकी शंकर को तो (शिव) से मिला देते हैं। हम तो शिव की बहुत बड़ी महिमा कर रहे हैं। शिवबाबा कहना बड़ी(ा) सहज है। और बाप ही पतित–पावन है। सिर्फ़ ईश्वर कहने से इतना जंचता नहीं है। अभी तुम बच्चों के दिल में जंचता है। बाप कैसे आकर पतितों को पावन बनाते हैं। एक ही बाप पतित–पावन है। दूसरा कोई है नहीं। लौकिक बाप भी है, पारलौकिक बाप भी है। पारलौकिक बाप को सभी याद करते हैं; क्योंकि पतित हैं तब तो याद करते हैं। पावन बन गये फिर तो दरकार ही नहीं है पतित–पावन को बुलाने की। ड्रामा देखो कैसा है। पतित–पावन बाप को याद करते हैं। चाहते हैं हम पावन दुनियाँ के मालिक बनें। पतित को कहा जाता है भ्रष्टाचारी, असुर। शास्त्रों में दिखाया है देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी; परन्तु ऐसे तो नहीं है। अभी तुम समझते हो हम न असुर हैं न देवता हैं। हम अभी हैं बीच के। बीच कुश्या कहा जाता है ना। सभी तुमको कोश(स)ते रहते हैं। यह खेल बड़ा ही मज़े का है। नाटक में मज़ा ही देखते हैं। वह सभी हैं हद के ड्रामा। उनको और कोई नहीं जानते। देवताएँ तो जान भी न सकें। अभी तुम कलियुग से निकल आये हो। जो खुद जानते हैं वह औरों को भी समझा सकते हैं। एक बार ड्रामा देखा तो फिर सारा ड्रामा बुद्धि में आ जावेगा। बाबा ने समझाया है यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। इनका बीज ऊपर है। तुम समझते हो यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। वैरायटी रू(प) कहते हैं ना। बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है शिवबाबा कोई से भाषा सीखा होगा। जबकि उनका कोई टीचर ही नहीं तो फिर भाषा कैसे सीखा होगा। तो ज़रूर जिस रथ में आते हैं उनकी भाषा ही काम में लावेंगे। उनकी अपनी भाषा कोई है नहीं। वह कुछ भी पढ़ते, सीखते ही नहीं हैं।

उनका कोई टीचर होता ही नहीं। कृष्ण तो सीखता है। उनके माँ–बाप टीचर हैं। उनको गुरु की दरकार ही नहीं; क्योंकि उनको तो सद्गति मिली हुई है। यह भी तुम जानते हो। तुम ब्राह्मण हो सभी से ऊँचे। यह तुम स्मृति में रखो। हमको पढ़ाने वाला है बाप। हम अभी ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कितना क्लीयर है। बाप को तो पहले से ही कह देते हैं कि वह सभी कुछ जानते हैं। क्या जानते हैं यह किसको भी पता नहीं। वह नॉलेजफुल है अर्थात् ज्ञान का सागर है। सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का उनको नॉलेज है। बीज को सारे झाड़ की नॉलेज होती है। वह तो है जड़ बीज। तुम जान सकते हो बीज से आम का झाड़ कैसे निकलता है। जड़ बीज तो बोल न सके। तुम हो चैतन्य। तुम अपने झाड़ का नॉलेज समझाते हो। बाप कहते हैं, मैं हूँ इस वैरायटी मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। है तो सभी मनुष्य ही; परन्तु वैरायटी है। एक भी आत्मा के शरीर के फीचर्स न मिलें दूसरे से। दो एक्टर्स एक जैसे हो न सकें। यह है बेहद का ड्रामा। हम मनुष्यों को एक्टर्स नहीं कहते हैं। आत्मा को कहते हैं। वह मनुष्य मनुष्य को ही एक्टर्स समझते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है कि आत्मा(एँ) एक्टर्स हैं। वह मनुष्य से डांस कराते हैं। यह (भ)ी आत्मा है। जो मनुष्य को डांस कराती है। पार्ट बजाती (है)। यह तो बड़ी सहज समझने की बातें हैं। बेहद का बाप आते भी ज़रूर हैं। ऐसे नहीं कि नहीं आते हैं। (शिव) जयन्ती भी होती है। बाप आते ही हैं तब जब पुरानी दुनियाँ बदली करनी होती है। भक्ति मार्ग (में) कृष्ण को याद करते रहते हैं; परन्तु कृष्ण आवे कैसे कलियुग में। इस संगम पर तो कृष्ण का रूप इन (आँखों) से देख नहीं सकते। फिर उनको भगवान कैसे कहें। वह तो सतयुग का पहला नम्बर का प्रिंस है। उनको बाप, टीचर भी है। गुरु की उनको दरकार नहीं; क्योंकि सद्गति में हैं। स्वर्ग़ को सद्गति कहा जाता है। हिसाब भी क्लीयर है। बच्चे समझते हैं मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। सभी नहीं लेते हैं। कौन–2 कितना जन्म लेते हैं वह तुम हिसाब करते हो। डीटी घराणा ज़रूर पहले–2 आती है। पहला नम्बर उनका ही होता है। एक (का हुआ) तो उनके पिछाड़ी भी आ जाते हैं। यह सभी बातें तुम ही जानते हो। तुम्हारे में भी कोई अच्छी रीत समझते हैं। जैसे उस पढ़ाई में भी होता है। यह है भी बहुत सहज। सिर्फ़ एक डिफीकल्टी गुप्त है। तुम बाप को याद करते हो इसमें माया विघ्न डालती है; क्योंकि माया रावण को हसद होता है। तुम राम को याद करते तो रावण को हसद होता है। हमारा मुरीद राम को क्यों याद करता है। यह भी ड्रामा में पहले से ही नूँध है। नई बात नहीं। कल्प पहले जो पार्ट बजाया है वही बजावेंगे। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है वही अभी कर रहे हैं। यह चक्र फिरता आता है। यह बन्द नहीं होता। टाइम की टिक(–2) होती ही रहती है। बाप समझाते हैं यह 5000 वर्ष का ड्रामा है। शास्त्रों में तो क्या–2 बातें लिख दी हैं। (भक्ति) मार्ग के लिए यह सभी झूठी किताबें आदि बनाई हैं। मुनष्य समझते हैं भक्त लोग बहुत अच्छा काम करते हैं। बाप समझाते हैं भक्तों में भी अच्छे वा बुरे होते हैं; परन्तु उनको भी तो नीचे उतरना ही पड़ता है। भक्ति माना ही दुगर्ति। तुम बच्चों ने सीढ़ी के राज़ को अच्छी रीत समझा है। अभी तुम समझते हो बरोबर भक्ति अंधियारा मार्ग है। भक्ति वालों को यह मालूम नहीं पड़ता है। नहीं तो भक्ति ही छोड़ दें। भक्ति छुड़ाने बाप आते हैं। सो भी ऐसे कब नहीं कहेंगे तुम यह भक्ति न करो; क्योंकि अगर यहां भी न चल सके और छूट जाये तो न इधर का न उधर का रहे। कोई काम का न रहा; इसलिए तुम देखते हो कई मनुष्य ऐसे भी जो भक्ति आदि नहीं करते हैं। बस ऐसे ही चलता रहता है। भगवान ही अनेक रूप धरते हैं। अरे यह बेहद का अनादि बना बनाया ड्रामा का खेल है। जो रिपीट होता रहता है; इसलिए उनको (अनादि) वर्ल्ड ड्रामा कहा जाता है। इसको भी तुम बच्चे ही समझ रहे हो। इसमें भी तुम कुमारियों के लिए ..... ही सहज है। माताओं को तो फिर जो सीढ़ी चढ़ी है वह उतना पड़े। कुमारी को तो और कोई सम्बंध ..... चिंतन ही नहीं। बाप का बन जाना है। लौकिक संबंध को भूल पारलौकिक संबंध जोड़ना है। यह तो

जनते हो कलियुग में है ही दुगर्ति। दुगर्ति माना तमोप्रधान। नीचे उतरना ही है ड्रामा अनुसार। भारतवासी कहते भी हैं यह सभी कु(छ) ईश्वर का है। वह मालिक है। तुम कौन हो? हम आत्मा हैं। बाकी यह सभी ईश्वर का है। यह देह आदि जो कुछ है परमात्मा ने दिया है। मुख से कहते हैं ठीक है यह सभी कुछ ईश्वर ने दिया है। अच्छा, फिर उनकी दी हुई चीज़ में ख़्यानत थोड़े ही डालनी चाहिए; परंतु इस पर चलते नहीं हैं। बाप कहते हैं, रावण मत पर चल पड़ते हैं। बाप समझाते हैं तुम तो ट्रस्टी हो; परंतु रावण सम्प्रदाय होने कारण ट्रस्टी पने में भी अपन को धोखा देते हो। मुख कहते एक हो, करते दूसरा हो। बाप ने चीज़ दी और ली। उसमें तुमको दुःख क्यों होता है। ममत्व मिटाने के लिए यह बातें बाप अपने बच्चों को समझाते हैं। अभी बाप आये हैं। तुमने ही पुकारा है बाबा आकर हमको साथ ले चलो। हम रावण राज्य में बहुत दुःखी हैं। आकर हमको पावन बनाओ; क्योंकि समझते हैं पावन बनने बिगर हम जा नहीं सकते। हमको ले जावेंगे कहां? घर ले चलो। सभी कहते हैं हम घर जावेंगे। कृष्ण के भक्त चाहते हैं कृष्णपुरी, वैकुण्ठ में जावें। सतयुग ही याद रहता है। प्यारी चीज़ है ना। मरते हैं तो कोई स्वर्ग़ जाता नहीं। स्वर्ग़ तो सतयुग में ही होता है। कलियुग में होता है नर्क। तो ज़रूर पुनर्जन्म जन्म नर्क में ही होगा। यह कोई सतयुग थोड़े ही है। वह तो वण्डर ऑफ वर्ल्ड है। कहते हैं, समझते भी हैं, फिर भी कोई (म)रता है तो उनके संबंधी आदि कुछ भी नहीं समझते हैं। बाप के पास तो 84 के चक्र की सारी नॉलेज है। वह एक बाप ही दे सकते हैं। दूसरा न कोई। तुम जो अपने को देह समझते थे वह रॉंग था। अभी बाप कहते हैं देही अभिमानी भव्। कृष्ण तो कह न सके। देही अभिमानी भव्। उनको तो अपनी देह है ना। शिवबाबा को अपना देह नहीं है। यह तो उनका रथ है जिसमें विराजमान हुये हैं। उनका भी रथ है इनका भी रथ है। इनकी अपनी आत्मा भी है। बाबा का भी लोन लिया हुआ है। बाप कहते हैं, मैं इनका आधार लेता हूँ। अपना तो है नहीं। तो पढ़ावेंगे कैसे। बाप रोज़ बैठ बच्चों को खैंचते हैं कि अपन को आत्मा समझो और बाप को देखो। यह शरीर भी भूल जाओ। हम तुमको देखें, तुम हमको देखो। तुम जितना बाप को देखेंगे पवित्र होते जावेंगे। और कोई उपाय पावन होने का है नहीं। अगर हो तो बनाओ। जिससे आत्मा पवित्र होती हो। गंगा के पानी से तो नहीं होंगे। वह तो धक्के खाने की चीज़ है। भक्ति मार्ग में भित्तर–2 में भगवान को खोजते हैं। देवताओं में भी ढूँढ़ा कि शायद मिल जाये; परंतु मिला किसको भी नहीं। किसको भी पता नहीं है। पहले–2 तो कोई को भी बाप का ही परिचय देना है। ऐसा बाप तो और कोई होता नहीं। नब्ज़ देखो ऐसा समझाओ। जो एकदम चकित हो जाये। समझे कि बरोबर उनको परमात्मा कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को अपना दे रहे हैं। मैं कौन हूँ। यह भी बच्चों को मालूम है हिस्ट्री रिपीट होती है। जो इस कुल के होंगे वही आवेंगे। बाकी तो सभी अपने धर्म में चले जावेंगे। जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं वह फिर निकल अपने–2 सेक्शन में आ जावेंगे; इसलिए निराकारी झाड़ भी दिखाया है। यह बातें तुम बच्चे ही समझते हो। बाकी तो कोई तो मुश्किल ही समझेंगे। 7–8 से कोई निकलेंगे। जो समझेंगे यह नॉलेज तो बहुत अच्छी है। यहां का जो होगा उनको तूफान आवेंगे। दिल होगी फिर जावें जाकर सुनें। कई तो संग के रंग भी रंग जाते हैं। तो फिर आते ही नहीं। जहां पार्टी को जाता हुआ देखेंगे तो उसमें लटक पड़ेंगे। मेहनत लगती है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। घड़ी–2 कहते हैं हम भूल जाते हैं। मैं आत्मा हूँ। शरीर नहीं। यह घड़ी–2 भूल जाते हैं। बच्चे काम चिक्षा पर बैठ काले बन पड़ते हैं; इसलिए (सांवरे) बन गये हैं उनको ही बाप पढ़ाकर फिर बोराद (गोरा), सुन्दर बनाते हैं। सभी मनुष्यों को श्याम से सुन्दर, सुन्दर (से श्याम होना ही पड़ता है। कहते हैं हमारे सभी बच्चे जल मरे हैं। यह बेहद की बात है। 500 करोड़ बच्चे {आत्मा(एं)} हमारे घर में रहने वाले हैं। अर्थात् ब्रह्मलोक में रहने वाले हैं। बाप तो बेहद में खड़े हैं ना। तुम भी (बेहद में) खड़े हो जावेंगे। बाबा स्थापना करके चला जावेगा। फिर तुम राज्य करेंगे। बाकी मनुष्य शान्तिधाम चले जा(वेंगे) (अच्छा मीठे–2) बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।